IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

भारत में सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ावा देने में डिजिटल उपकरणों की भूमिका

डॉ॰ गौरव त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर -राजनीति विज्ञान

राजकीय पी जी कालेज, मुसाफिरखाना-अमेठी

सारांश

भारतीय संस्कृति, भाषाओं, कलात्मक परंपराओं, अनुष्ठानों, लोकज्ञान और समुदायिक प्रथाओं पर आधारित है, यह डिजिटल युग में एक नए स्वरूप में विकसित हो रही है। स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटॉप और स्मार्ट टीवी जैसे डिजिटल उपकरण आज संस्कृति के संरक्षण, प्रसार, उपभोग और नए रूपों में निर्माण के साधन बन गए हैं। यह शोध-पत्र विश्लेषण करता है कि भारत में डिजिटल उपकरणों ने किस प्रकार सांस्कृतिक सत्यता और नवाचार को प्रोत्साहित किया है। अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक पद्धति और वर्णनात्मक विश्लेषण पर आधारित है तथा इसमें अनेक रिपोर्टों, विद्वतापूर्ण शोध और डिजिटल पहलों का अध्ययन शामिल किया गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष बतलाता हैं कि डिजिटल उपकरणों ने भारतीयों की सांस्कृतिक पहुँच का विस्तार किया है, साथ ही साथ परंपरागत ज्ञान को नई पीढ़ी के निकट लाया है, इसने भाषाई विविधता से राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया है और समुदायों को अभिव्यक्ति के नए अवसर प्रदान किए हैं। हालांकि डिजिटल विभाजन और एल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी डिजिटल उपकरण भारत में सांस्कृतिक प्रगति के शक्तिशाली माध्यम बन चुके हैं।

मुख्य शब्द

डिजिटल उपकरण, भारत, सांस्कृतिक उन्नति, डिजिटल मीडिया, विरासत संरक्षण, भाषाई विविधता, सोशल मीडिया, डिजिटल संस्कृति, ऐल्गारिदम, सत्यता, समाजीकरण